प्रश्न ३५—गुलाम कौन थे ? कुतुबुद्दीन ऐबक के शासन काल का वर्णन करो।

अथवा

गुलाम वंश का यह नाम क्यों पड़ा ? कुतुबुद्दीन का जीवन-चरित्र लिखते हुये उसके शासन काल की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिये ?

उत्तर—गजनी और गोर के सुल्तानों के यहाँ गुलामों की भरमार थी। इन गुलामों को सुल्तान पुत्र से भी अधिक प्यार करते थे। राजनैतिक दृष्टि से इन गुलामों का विशेष महत्व था। जैसा कि लेनपूल ने लिखा है—"एक योग्य शासक का पुत्र असफल हो सकता है किन्तु कभी-कभी उसका दास अपने स्वामी के समान प्रतिभापूर्ण सिद्ध होता है।"

इस प्रकार कहा जाता है कि सन्तान के अभाव में गुलाम लोग उत्तराधिकार का प्रश्न हल करने के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते थे। मुहम्मद गोरी के पास बहुत से गुलाम थे जिनमें कुतुबुद्दीन ऐबक का नाम उल्लेखनीय है।

उसके चार गुलाम थे—एलदौज अफगानिस्तान में, कुबाचा सिंध में, बख्त्यार बंगाल में व ऐबक दिल्ली में महान् साम्राज्य के संस्थापक हुए। यहाँ पर कुतुबुद्दीन ऐबक का विस्तृत वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि विद्वानों का मत है कि उसने भारत में एक नये राजवंश की नींव डाली। उसके साम्राज्य को भारतीय इतिहास में तुर्क सल्तनत और उसके वंश को गुलाम वंश की संज्ञा दी गई है। कुतुबुद्दीन ऐबक के विषय में यहाँ तक भी कहा गया है कि वह भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक निर्माता था।

"He was the real founder of Muslim dominions in India."

—Lane Poole.

कुतुबुद्दीन तथा उसका शासन-काल

प्रारम्भिक जीवन

कुतुबुद्दीन तुर्किस्तान में पैदा हुआ था। बचपन में वह अपने सम्बन्धियों से बिछुड़ गया था, निशापुर के प्रधान काजी फकरुद्दीन ने उसे खरीद लिया। फकरुद्दीन की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन को मुहम्मद गोरी ने खरीद लिया। कुतुबुद्दीन ने निशापुर के काजी के यहाँ उचित शिक्षा प्राप्त कर ली थी। उसके सैनिक गुणों से आकर्षित हो कर सुलतान ने उसे अपने सेनापति के पद पर नियुक्त कर लिया और हिन्दुस्तान की विजय के समय वह उसको अपने साथ लाया था। हिन्दुस्तान की विजय के बाद उसने अपने भारतीय साम्राज्य का उसको गवर्नर नियुक्त किया था।

गवर्नर के रूप में

कुतुबुद्दीन ऐबक को मुहम्मद गोरी ने अपने भारतीय साम्राज्य का संरक्षक बनाया था। किन्तु ऐबक ने गोरी के गवर्नर के रूप में ही अधिक ख्याति प्राप्त की। लेनपूल ने लिखा है—

"Aibek's chief exploits were achieved during viceroyalty."

Lane Poole

मुहम्मद गोरी के गजनी चले जाने के बाद ऐबक ने मेरठ, कालिंजर, महोबा

उसके न्याय का वर्णन करते हुए लेनपूल ने लिखा है कि—"उसके राज्य में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे और सड़कें डाकुओं से स्वतन्त्र थीं। हिन्दू ऊँच हो या नीच, आदर की दृष्टि से देखा जाता था।"

उसके दान का वर्णन करते हुए विद्वानों ने उसे लाखबख्श की उपाधि दी है। किन्तु इतना होते हुए भी कुतुबुद्दीन ऐबक एक कट्टर मुसलमान था। यद्यपि उसमें धार्मिक सहिष्णुता थी, फिर भी वह इस्लाम के रक्षक के रूप में महान सैनिक था। जैसा कि एक इतिहासकार ने लिखा है—

"The realm was filled with friends and cleaned of foes. His bounty was continuous and so was his slaughter."

निष्कर्ष

कुतुबुद्दीन का इतिहास में विशेष स्थान है। प्रसिद्ध पुस्तक तबकाते नासिरी के अनुसार कुतुबुद्दीन ऐबक लाखों का दान करता था और लाखों की हत्या भी करा देता था। किन्तु इतना होते हुए भी कुतुबुद्दीन ऐबक में महान शासक के गुण थे। निर्दयी होते हुए भी वह कला का प्रेमी था।